दिनांक 25 सितम्बर, 2018

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

क्वांटम फिजिक्स और अनिश्चित्ता के सिद्धांत पर सांची विश्वविद्यालय में चर्चा

- सांची विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ
- यूरोपीय वैज्ञानिकों को मजबूर होकर पढ़ने पड़े थे वेदांत- प्रो. रामनाथ झा
- एक मंच पर इक्ट्ठा हुए देश के विभिन्न दार्शिक और विद्वान
- चेतना, दर्शन और न्यूटन के यांत्रिकवाद पर गहन चर्चा
- भारतीय दर्शन में सूक्ष्मता और वैचारिक स्वतंत्रता है

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला Writing Indian Philosophy in Modern Perspective (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतयीय दर्शन का लेखन) का शुभारंभ हो गया। उद्घाटन सत्र के उपरांत प्रारंभ हुए सत्र में **"वेदांत और भौतिकी"** विषय पर चर्चा की गई।

क्वान्टम फिज़िक्स(Quantum Physics)पर दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्ययन करना पड़ा। उनका कहना था कि जब वेदांतों के अनुवाद मैक्स म्यूलर और अन्य दार्शनिकों के माध्यम से यूरोप पहुंचे तो **नील बोहर, श्रोडिंगर, हाइज़िनबर्ग और व्हीलर जैसे भौतिक विज्ञानियों को उपनिषद के अनुवाद पढ़ने पड़े।**

इन वैज्ञानिकों के मन-मष्तिष्क में उठ रहे सवालों का जवाब उन्हें उपनिषदों के अनुवाद से मिला और उन्होंने और अधिक इन वेदांतों का अध्ययन किया। हाइज़िनबर्ग ने 'Theory of Uncertainty (अनिश्चित्ता का सिद्धांत)' दिया था और इस सिद्धांत को लेकर उनकी अलबर्ट आइंसटीन से काफी बहस भी हुआ करती थी। अनिश्चित्ता के सिद्धांत को वेदांत दर्शन में प्राथमिकता से उल्लेखित किया गया है

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. एम के श्रीधर ने **"भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान"** विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना(आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइज़िनबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। प्रो. श्रीधर का कहना था कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं। प्रो. श्रीधर का कहना था कि यूरोपीय वैज्ञानिक श्रोडिंगर ने भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के बाद कहा था कि भारतीय दर्शन में बेहद सूक्ष्मता और विचित्रता है यानि इसमें स्वतंत्र चिंतन मौजूद है।

कार्यशाला के प्रथम दिवस के दूसरे सत्र में धर्मशास्त्र के मीमांसा और पुरुषार्थ में आचार-विचार पर चर्चा की गई। कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत में वर्णित छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से बताया कि कैसे एक समय में धर्म कही जाने वाली स्थिति को दूसरे समय अपधर्म कहा जा सकता है।

पुरुषार्थ एवं काव्यात्मक विकास के विषय पर प्रो. अनंत गीरि ने अपने विचार रखे। सांची विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला के दूसरे दिन प्रथम सत्र में पुणे विश्वविद्यालय की प्रो. शुभ्दा जोशी **"चाणक्य के अर्थशास्त्र"** और दूसरे सत्र में डॉ अरूण मिश्र **"संशय सूत्र की व्याख्या"** पर गहन चर्चा करेंगे। कल दोपहर बाद आयोजित होने वाले सत्रों में विश्व भारती शांतिनिकेतन के प्रो. सिराजुल इस्लाम **"सूफी मत और वेदांत"** तथा प्रो. रघुनाथ घोष **"वेदांत का समकालीन महत्व"** विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

कार्यशाला के दौरान प्रत्येक सत्र के उपरांत एक प्रश्न उत्तर सत्र भी रखा जाता है जिसमें सभी सम्मिलित व्यक्ति विषय से संबंधित प्रश्नों को व्याख्याताओं से कर सकते हैं। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में आज भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. एस.आर भट्ट और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के वर्तमान अध्यक्ष डॉ जमखेड़कर ने भी आपने व्याख्यान दिए। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ प्रो. यज्ञेश्वर एस. शास्त्री ने बताया कि Writing Indian Philosophy in Modern Perspective (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतयीय दर्शन का लेखन) का कार्य अगले 10 वर्षों में कई परियोजनाओं के माध्यम से किया जाना है। उद्घाटन सत्र में वि.वि के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी भी मौजूद थे।